औरंगजेब की धार्मिक नीति

Course - M.A. History, Part II, Paper-X, Prepared by - Dr. P.K. PODDAR

औरंगजेब की धार्मिक नीति एक विवादास्पद विषय है। अनेक यूरोपीय और भारतीय इतिहासकारों ने औरंगजेब को एक धर्मांध शासक के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति औरंगजेब ने त्याग दिया जिससे साम्राज्य के प्रति हिन्दुओं की निष्ठा कम हो गई। धार्मिक कट्टरता के वशीभूत होकर उसने गैर-इस्लाम धर्मवालों पर अत्याचार किए जिसके परिणामस्वरूप राज्य में अनेक विद्रोह हुए एवं मुगल सत्ता की जड़ें खोखली हो गईं। औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति ने मुगल साम्राज्य के पतन में योगदान दिया। परन्तु आधुनिक काल में अनेक विद्वान इस मत को स्वीकार नहीं करते हैं। उनका तर्क है कि औरंगजेब ने सिर्फ गैर-इस्लाम धर्मवालों के प्रति कठोर रवैया नहीं अपनाया बल्कि इस्लाम धर्म की अनेक कुरीतियों को भी बंद करने का प्रयास किया। उसके अनेक हिन्दुविरोधी कार्य वस्तुतः तत्कालीन राजनीतिक और आर्थिक कारणों से प्रभावित थे। इसलिए उसपर धर्मांधता का आरोप नहीं लगाया जा सकता। सत्य दोनों के बीच है। वह न तो अति धर्मांध था और न अधिक उदार।

औरंगजेब की धार्मिक नीति तत्कालीन परिस्थितियों की देन थी। वह एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने राजगद्दी कट्टरपंथियों के समर्थन से प्राप्त की थी। अतः शासक बनते ही उसने कुरान के नियमों का कड़ाई से पालन करवाना आरंभ किया जिससे 'दार-उल-हर्ब' को 'दार-उल-इस्लाम' में परिवर्तित किया जा सके। इसलिए उसने पहले ही

चली आ रही कुरान के नियम विरोधी अनेक प्रथाओं पर पाबंदी लगा दी। उसने सिक्कों पर 'कलमा' खुदवाना बंद कर दिया जिससे सिक्के विभिन्न हाथों में जाकर गंदे न हो जाँय अथवा पैरों तले रौंदे नहीं जाँय। उसने "नौरोज" का त्योहार मनाना बंद कर दिया क्योंकि यह जरथुस्त्र सम्प्रदाय का त्योहार था। झरोखा दर्शन एवं तुलादान की प्रथा को भी इस्लाम विरोधी मानकर बंद कर दिया गया। ज्योतिषियों एवं पंचांग बनानेवालों पर भी रोक लगा दी गई, परन्तु औरंगजेब इन नियमों को बहुत कड़ाई से लागू नहीं करवा सका। राजपरिवार के सदस्य और अन्य लोग भी ज्योतिषियों पर से अपना विश्वास नहीं हटा सके। अपने शासन के ग्यारहवें वर्ष (1669) में औरंगजेब ने दरबार में संगीत तथा नाच-गाना पर प्रतिबंध लगा दिया तथा सरकारी संगीतज्ञों को अवकाश दे दिया गया। इसके बावजूद महल में नौबत एवं अन्य बजाए जाने वाले वाद्ययंत्रों का प्रचलन बना रहा। हरम की स्त्रियों एवं प्रभावशाली सरदारों के घरों में नाच-गाना प्रचलित रहा। औरंगजेब स्वयं भी वीणा बजाने में दिलचस्पी रखता था। नैतिक दृष्टिकोण से सम्राट ने गांजा, और अफीम को छोड़कर अन्य मादक पदार्थों के उपयोग पर पाबंदी लगा दी। शराब का निर्माण एवं इसकी खरीद-बिक्री बंद कर दी गई। वेश्याओं और नर्तकियों को विवाह कर लेने अथवा साम्राज्य से बाहर निकल जाने के आदेश दिए गए। इसी प्रकार होली, मुहर्रम, जुआ खेलने, तिलक लगाने एवं मूर्तियों के रखने पर भी रोक लगाई गई। औरंगजेब स्वयं भी कुरान के नियमों का कड़ाई से पालन करता था। वह नियम से "नमाज"

पड़ता, युद्धक्षेत्र में भी वह इस नियम का उल्लंघन नहीं करता था। उसने जन्मदिन और राज्याभिषेक के अवसर पर किए जानेवाले भड़कीले आयोजनों को बंद करवा दिया। राजदरबार को सस्ते तथा साधारण ढंग से सजाया गया तथा किरानियों को चाँदी के स्थान पर मिट्टी के दवात दिए गए। आर्थिक पहलू को ध्यान में रखकर इतिहास लिखने वाले सरकारी विभाग को भी बंद कर दिया गया। औरंगजेब के इन सादगीपूर्ण कार्यों से कट्टर मुसलमानों में उसकी छवि निखर गई एवं वह 'दरवेश' अथवा 'जिन्दापीर' के नाम से जाना जाने लगा।

औरंगजेब ने इस्लाम धर्म को प्रोत्साहन एवं संरक्षण देने के लिए भी अनेक कदम उठाए। उसने अनेक पुराने मस्जिदों का जीर्णोद्धार करवाया, उनके लिए धन की व्यवस्था की तथा उनकी समुचित देखभाल के लिए अधिकारी नियुक्त किए। मुसलमान व्यापारियों को करमुक्त व्यापार करने की सुविधा दी गई, परन्तु बाद में उन्हें $2\frac{1}{2}$ प्रतिशत कर देना पड़ा। हिन्दुओं पर यह कर 5 प्रतिशत था। राज्य के कुछ पद जैसे- पेशकार, करोड़ी इत्यादि सिर्फ मुसलमानों के लिए ही सुरक्षित कर दिए गए, लेकिन बाद में यह प्रतिबंध भी हटा लिया गया। औरंगजेब ने सभी प्रान्तों में 'मुहतसिबों' की नियुक्ति की जिनका काम था कि वे ~~सभी~~ इस बात की देखभाल करें कि लोग शरिया के नियमों का उल्लंघन नहीं करें।

इन तथा ऐसे ही कुछ कदमों को देखकर हम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि

औरंगजेब धर्मांध व्यक्ति था। इसके विभिन्न कार्यों के उद्देश्य भी अलग-अलग थे। दूसरी तरफ उसे पक्षपाती और दूसरे धर्मों के अनुयायियों के प्रति असहिष्णु कहा जाता है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों के प्रति उसका दृष्टिकोण तथा जजिया को लागू करना है।

हिन्दुओं के प्रति अनुदार नीति अपनाने का मुख्य कारण यह था कि उनमें अधिकांश ने दारा को समर्थन दिया था तथा उनकी साम्राज्य के प्रति निष्ठा कमजोर पड़ती जा रही थी। अतः उनपर नियंत्रण रखने के लिए औरंगजेब ने कुछ सख्त कदम उठाना आवश्यक समझा। हिन्दुओं द्वारा धर्म-परिवर्तन को प्रोत्साहन दिया गया। धर्म-परिवर्तन करने वाले हिन्दुओं को सरकारी नौकरियाँ, सम्मान एवं धन का लालच दिया गया। सिखों के गुरु तेगबहादुर को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए कहा गया था और उनके इन्कार करने पर उन्हें कत्ल कर दिया गया। सरकार के उच्च पदों से यथासंभव हिन्दुओं को अलग रखने एवं सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर मुसलमानों की नियुक्ति की व्यवस्था की गई। हिन्दू व्यापारियों पर मुसलमानों की तुलना में कर का बोझ अधिक डाला गया। उनपर अन्य प्रतिबंध भी लगाए गए। सड़कों पर होली खेलना अथवा होली के लिए पैसा या लकड़ी वसूल करना बंद कर दिया गया। सती-प्रथा, हिन्दू मेलों तथा धार्मिक उत्सवों पर प्रतिबंध लगाया गया। राजपूतों के अतिरिक्त अन्य जाति के हिन्दुओं के लिए हथियार लेकर, हाथी, अच्छी नस्ल के घोड़े एवं पालकी पर चलने की प्रथा को बंद कर दिया गया।

हिन्दुओं के संदर्भ में औरंगजेब का सबसे अधिक विवादास्पद कार्य था —

हिन्दू मंदिरों को तोड़ना, उनकी शिक्षण संस्थाओं को बंद करना तथा जजिया एवं तीर्थ यात्रा कर पुनः लागू करना। उसने शरिया के नियमों के अनुसार नए मंदिरों के निर्माण पर रोक लगा दी। यद्यपि पुराने मंदिरों की मरम्मत की अनुमति दी गई, परन्तु अनेक मंदिर तोड़ भी गए। 1665 ई० में सोमनाथ के मंदिर सहित गुजरात के अनेक मंदिर नष्ट कर दिए गए। जैसे-जैसे औरंगजेब को स्थानीय शक्तियों द्वारा विरोध बढ़ता गया वैसे-वैसे हिन्दू मंदिर के प्रति उसकी नीति कठोर होती गई। स्थानीय शक्तियों को दंडित करने के उद्देश्य से अनेक मंदिर तोड़े गए। मंदिरों के तोड़े जाने का एक अन्य कारण भी था। मंदिरों में हिन्दू शिक्षा की भी व्यवस्था रहती थी, जहाँ इस्लाम विरोधी प्रचार होता था। यहाँ शिक्षा प्राप्त करने अनेक मुसलमान भी आते थे। इससे इस्लाम धर्म का प्रभाव घटने का भी खतरा पैदा हो गया था। इसलिए बनारस में विश्वनाथ मंदिर, मथुरा में केशवराय मंदिर तथा उड़ीसा, राजपूताना और देश के विभिन्न भागों में अनेक मंदिर एवं उनकी मूर्तियाँ नष्ट कर दी गई और उनकी जगह पर मस्जिदों का निर्माण किया गया। लेकिन यह सोचना गलत होगा कि मंदिरों को तोड़ने के लिए कोई आम आदेश जारी किए गए थे। लेकिन युद्ध के दौरान स्थिति बदल जाती थी। उदाहरण के लिए 1679-80 में जब औरंगजेब मारवाड़ के राठौड़ और उदयपुर के राणा के साथ संघर्षरत था, उदयपुर तथा जोधपुर और उसके परगनों के अनेक मंदिरों को ध्वस्त कर दिया गया। 1681 ई० के पश्चात मंदिरों के तोड़े जाने की प्रक्रिया धीमी पड़ गई। औरंगजेब ने 1679 ई० में

अकबर द्वारा हटाए गए जजिया को पुनः लागू कर दिया। उसने धर्म-यात्रा कर भी लगा दिया। औरंगजेब की इस नीति का विरोध हुआ, परन्तु वह अपने इरादे पर डटा रहा।

इस प्रकार अनेक विद्वानों ने औरंगजेब को एक धर्मांध व्यक्ति माना है। अपनी धार्मिक नीति द्वारा उसने बहुसंख्यक हिन्दूओं का समर्थन खो दिया और साम्राज्य की जड़ें खोखली कर दीं। लेनपूल का कहना है कि "अपने इतिहास में मुगलों ने पहली बार एक कट्टर मुसलमान को देखा-एक ऐसा मुसलमान जो अपना दमन भी उतना ही करता था जितना कि अपनी प्रजा का और एक ऐसा बादशाह जो अपने धर्म के लिए अपने राज्य सिंहासन को भी छोड़ने को तैयार था।" लेकिन अनेक आधुनिक इतिहासकारों ने इस विचार का खंडन किया है कि औरंगजेब एक धर्मांध एवं अनुदार शासक था तथा उसकी नीतियाँ सिर्फ धार्मिक द्वेष से प्रभावित थीं। उनके अनुसार औरंगजेब पर लगाए गए आरोप बेबुनियाद हैं। औरंगजेब की नीतियाँ धर्म से उतनी अधिक प्रेरित नहीं थीं जितनी राजनीतिक, नैतिक अथवा आर्थिक कारणों से। अतहर अली, सतीशचन्द्र और रामप्रसाद त्रिपाठी ने औरंगजेब की नीति का निष्पक्ष विश्लेषण किया है। मंदिरों को राजनीतिक कारणों से तोड़ा गया। साथ ही, यह भी बताया जाता है कि औरंगजेब ने अनेक मंदिरों को नष्ट नहीं किया, जैसे दक्षिण भारत के प्रसिद्ध मंदिरों को नष्ट नहीं किया गया। बंगाल में कुछ नए मंदिर बने भी। उसने हिन्दू मंदिरों एवं मठों को अनुदान भी दिए। इलाहाबाद, बनारस, चित्रकूट, गौहाटी, उज्जैन, गया इत्यादि स्थानों में मंदिरों को दान दिये जाने के प्रमाण

मिलते हैं। कुछ गुरुद्वारों को भी भूमि अनुदान दिया गया। इसी प्रकार जजिया लगाने का उद्देश्य हिन्दुओं पर आर्थिक दबाव बढ़ाना नहीं था, बल्कि मराठों और राजपूतों, जो युद्ध पर तुले थे, के विरुद्ध मुसलमानों को संगठित करना था। करीब 10 प्रतिशत धनी हिन्दुओं को ही इस कर का भार वहन करना पड़ा। औरंगजेब के समय में बड़े पैमाने पर हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन का भी प्रमाण नहीं मिलता है। उसके शासन काल में पूर्व काल की तुलना में हिन्दू मनसबदारों की संख्या 25% से बढ़कर 33% पहुंच गई। त्रिपाठी का मत है कि आरंभ में औरंगजेब ने हिन्दू प्रजा को ठेस पहुंचाने के उपाय नहीं किए मगर जब हिन्दू प्रजा का विरोध विभिन्न कारणों से बढ़ता गया तो उसने कट्टरपंथी मुसलमानों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए संकीर्ण धार्मिक नीति अपनाई। औरंगजेब द्वारा जारी किए गए नियमों को पूर्णता से लागू नहीं किया जा सका। अतः यह कहना कि औरंगजेब ने इस्लाम को राजधर्म घोषित कर दिया एवं 'दार-उल-हर्ब' को 'दार-उल-इस्लाम' में परिवर्तित करने के लिए धर्मयुद्ध छेड़ दिया, उचित नहीं है। स्थिति जो भी हो, औरंगजेब की धार्मिक नीति के भयंकर दुष्परिणाम हुए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि औरंगजेब ने राज्य के स्वरूप में परिवर्तन लाने की चेष्टा नहीं की लेकिन इसमें इस्लाम के तत्वों पर जोर अवश्य दिया। यह नहीं कहा जा सकता कि औरंगजेब का धार्मिक विश्वास उसकी राजनीतिक नीतियों का आधार था।

यद्यपि वह कट्टर मुसलमान था और इस्लाम के कानूनों की मान्यता कायम रखना चाहता था, शासक के रूप में औरंगजेब की दिलचस्पी अपने साम्राज्य के विस्तार और उसकी मजबूती में ही थी। इसी कारण जहाँ तक संभव हो सकता था वह हिन्दुओं के समर्थन को नहीं खोना चाहता था। इसके बावजूद कई अवसरों पर उसके धार्मिक विश्वासों और सार्वजनिक नीतियों में टकराव हुआ जिससे औरंगजेब के सामने कठिन समस्याएं आ खड़ी हुई। इसके कारण कई बार उसे पारस्परिक विरोधी नीतियों को अपनाना पड़ा जिनसे अंत में साम्राज्य को हानि उठानी पड़ी।